रात्रि क्लास 2/6/68 ओमशान्ति शिवबाबा याद है?

अभी बच्चे यहां प्रदर्शनी कर रहे हैं। आना–जाना सम्भाल के रखना(करना) है। आना–जाना बच्चियों का कम हो। अगर आवें भी तो साथ मेल हो। बाप दादा को सबसे जास्ती मोह बच्चों में रहता है। कितना दूर से आते हैं। अपना परमधाम छोड़ इनकी रेख–देख करने आते हैं। कितने कांटे से फूल बनाते हैं, तो ज़रूर बाप परवरिश करते हैं। कई समझते नहीं हैं। कॉलेज में कोई चुस्त कोई बुद्धू भी होते हैं। भैंस बुद्धि का। आयरन एज्ड वर्ल्ड है ना। है ही भैंस बुद्धि। सभी काले हैं ना। कुछ भी नहीं समझते। बाप को आकर समझाना पड़ता है। कोई भी नहीं जो इन्हों को समझावे, बाप को ही समझाना पड़ता है। तुम कहेंगे कि हम भी भैंस बुद्धि थे। तुम समझते हो अच्छी रीत जो भी मनुष्य मात्र है ही बंदर बुद्धि। बाप बंदर जैसे मनुष्यों से मंदिर जैसा बनाकर रावण पर जीत पहनाते हैं। बंदर से भेंट करते हैं। एप्स को मनुष्य आप समान बनाने की कोशिश करते हैं। ऊँच–ऊँच भगवान है बाप। ज़रूर वह अपने बच्चों को भी ऊँच ते ऊँच पद देते होंगे। बाप समझाते हैं शिव रात्रि भी मनाते हैं। शिवबाबा ही आकर यह रामराज्य स्थापन करते हैं। उद्घाटन तो बाप का किया हुआ है ना। नई दुनियां बन रही है। बनने समय में दूसरा कोई उद्घाटन होता नहीं। यह सेंटर्स पर उद्घाटन करते हैं। मनुष्यों को मालूम पड़(ड़े) तो आवें; इसलिए बाकी उद्घाटन तो बाप ने किया है। चढ़ने लिए तुम्हारे लिए लिफ्ट है। उतरने लिए लिफ्ट नहीं है। लिफ्ट ईज़ी है। इस समय जीते जी सभी कब्रदाख़िल हैं। तुम जो परिस्तानी बन रहे हो तो खुशी बहुत होगी। जितना जो समझा सकते हैं उनको खुशी ज़रूर होगी। जो इस धर्म के होंगे वह तुम्हारे पास आवेंगे। ढेर हैं। कनवर्ट हो गये होंगे तो निकल आवेंगे। सैम्पलिंग लगता रहेगा। मुसलमान, सिक्ख, पारसी भी आते हैं। तुम सारे विश्व को पवित्र बतकार(बनाकर) राज्य लेते हो। जितना तुम याद करते रहो शक्तिवान बनते जाते हो। साथ में नॉलेज तो है ही। वह तो बहुत सहज है, 84 का चक्र। बाकी जिनको कल्प पहले भी नॉलेज नहीं मिली है, उनके लिए डिफीकल्ट है। बच्चों को खुशी होता है बस यही सर्विस करेंगे। पता नहीं शरीर छूट जाए। क्यों नहीं हम बेहद के बाप से वर्सा पा लेवें। बच्चों ने पहचाना है तो श्रीमत पर चल बाप से पूरा वर्सा लेना चाएिह। कई बहुत अच्छे–2 शरीर छोड़ कर जाते हैं, तो उनकी याद में आँसू आ जाती है। बड़ी ही अच्छा था। ख़्याल करें तो सबसे अच्छे यह (ल.ना.) थे। अभी तो चित्र न हो तो तुम समझा सकते हो। मुख्य बात है याद की। मुरली आदि में तो बहुत तीखे हैं; परंतु वह अवस्था, याद की यात्रा मुश्किल है। बाप कहते हैं रोज़ का चार्ट रखो, तो मालूम पड़ेगा अपना। परंतु बहुत थोड़े ही रखते हैं। फिर बाबा समझते हैं ड्रामा अनुसार होता है। प्रदर्शनी में कोई हड्डी समझेंगे, कहेंगे यह तो बहुत अच्छा है। समझने लायक है। फिर जितना पढ़ेंगे उतना ऊँच पद पावेंगे। स्वर्ग़ के मालिक बनेंगे। अभी तो कोई भी कह देते हम भारत के मालिक हैं। प्रजा का राज्य है ना। पंचायती राज्य है जहां–तहां। उनको अपने धर्म का पता नहीं है। ऐसे तो बहुत हैं जो अपने धर्म को नहीं जानते। कोई अपने ख़्याल का कोई अपने ख़्याल का। जो गुरु कहे वह करेंगे। तो गुरु को ही मिनिस्टर बना दे। यह भी सभी ड्रामा में नूँध है। तुम बच्चे इस ड्रामा की ग्लानी नहीं करते हो। बतलाते हो कैसे मनुष्य हैं। यह खेल बिल्कुल अच्छा बना हुआ है ; परंतु अपना प(ा)र पाने लिए पुरुषार्थ करना है। बाप कहते हैं माया से खबरदार रहो। बाप को कब भी भूले–चूके छोड़ना नहीं, अगर पहचाना है तो। बाप कहते हैं काम महाशत्रु है। इनको जीतने से तुम स्वर्ग़ के मालिक बनेंगे। जो पुरुषार्थ करेंगे वही स्वर्ग़ के मालिक ऊँच पद पावेंगे। स्वर्ग़ न देखा, राज्य न पाया तो मनुष्य क्या काम का।

अच्छा मीठे–2 सिकीलधे बच्चों को रूहानी बाप व दादा का यादप्यार गुडनाइट। मीठे–2 रूहानी बच्चों को रूहानी बाप का नमस्ते। नमस्ते।

–:बेहद के बाप का बेहद का वर्सा याद है?:–